

सी.बी.एस.ई. द्वारा आयोजित
शिक्षक-सम्मान समारोह के अवसर पर
अध्यक्ष का अभिभाषण
3 सितम्बर 2016

माननीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री जी, सचिव, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग , सभी पुरस्कृत शिक्षकगण, मेरे CBSE के सभी सहकर्मी , मीडिया के उपस्थित मित्र एवं अन्य सभी विद्वतजन । आप सभी का केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के द्वारा आयोजित शिक्षक सम्मान और पुरस्कार वितरण समारोह में हार्दिक स्वागत है ।

1- आज शिक्षा के उन्नयन के प्रति समर्पित शिक्षकों को पुरस्कृत कर केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड गौरवान्वित हो रहा है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के लिये सदैव कटिबद्ध रहा है । इस परिवार का प्रमुख होने के नाते आज आप सभी का स्वागत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है ।

2- गुरु, अध्यापक या आचार्य जिस भी नाम से पुकारिए हर युग में शिक्षक महत्वपूर्ण रहे हैं। जिस प्रकार दीपक जलकर सारे जग को प्रकाशित करता है उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्यों को अज्ञानता के अंधकार से निकालकर उजालों के संसार में ले जाता है । आचार्य चाणक्य ने कहा भी है - " शिक्षक कभी साधारण नहीं होता सृजन और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं ।" सभी जानते हैं कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षक और विद्यार्थियों के सम्बन्ध बदल रहे हैं और इस बदलते परिवेश में सबसे अधिक जिम्मेदारी शिक्षकों की बनती है । तकनीकी क्रांति के इस युग में ज्ञान (Knowledge) तो विद्यार्थी कहीं से भी प्राप्त कर लेंगे लेकिन उन्हें ज्ञान के साथ-साथ विवेक, देशभक्ति की भावना और समाज के प्रति

उत्तरदायित्व आदि गुण एक शिक्षक ही दे सकता है । इसलिए केवल अध्यापन कार्य कर लेने से शिक्षकों के उत्तरदायित्व की इतिश्री नहीं हो जाती, अपितु शिक्षक का कार्य बहुत व्यापक है । समाज को संस्कारवान बनाए रखने का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षक ही करते हैं । शिक्षक बच्चों का जीवन तराशकर उसे समाज के लिए सक्षम बनाने वाला जौहरी होता है । कबीरदास द्वारा लिखी गई पंक्तियाँ जीवन में गुरु के महत्त्व को दर्शाती हैं :

गुरु गोविंद दोउ खड़े , काके लागों पाय ।
बलिहारी गुरु आपने , गोविंद दियो बताय ॥

अपनी महत्ता के कारण हमारे शास्त्रों में गुरु को ईश्वर से भी ऊंचा पद दिया गया है :

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुदेवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

सभी धर्मग्रन्थों एवं सभी महान संतों द्वारा भी गुरु की महिमा का गुणगान किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरितमानस में लिखते हैं :

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबिकर निकर ॥

3- प्राचीन भारत में ऋषियों के आश्रमों और गुरुकुलों में प्रचलित शिक्षा पद्धति " श्रुति और स्मृति " पर आधारित थी । आचार्य द्वारा अपने शिष्यों को औपचारिक और अनौपचारिक दोनों विधियों से विभिन्न विषयों जैसे वेद, वेदान्त दर्शन, न्यायशास्त्र, नीतिशास्त्र, धनुर्विद्या, अर्थशास्त्र, चिकित्सा, शल्यक्रिया आदि विषयों के ज्ञान के साथ-साथ नैतिक शिक्षा भी दी जाती थी । इसके लिए सतत एवं समन्वित शिक्षण (constant & comprehensive learning) के साथ सतत

मूल्यांकन की प्रक्रिया अपनाई जाती थी । अतः गुरु एवं शिष्य का सम्बन्ध भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है । चाहे तकनीक कितनी भी विकसित हो जाये परन्तु वह शिक्षक का स्थान नहीं ले सकती । वह सूचना तो प्रदान कर सकती है परन्तु छात्रों में भावना नहीं जगा सकती । **स्वामी विवेकानन्द के अनुसार - शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है ।** यह तो शिष्य के अन्दर छिपा हुआ एक अनमोल खजाना, हीरा है, जिसे एक गुरु द्वारा तराशा जाता है। अपने शिष्य को ऊँचे मुकाम पर देखना शिक्षक का सबसे बड़ा सपना होता है । **उपनिषद्** में लिखा गया है :

सह नौ ववतु सह नौ भुनक्तु ।

सह वीर्यम करवा वहै ।

तेजस्विना वधीतमस्तु ।

मा विद्विषा वहै ॥

4- यहाँ यह बात समझना ज़रूरी है कि वही शिक्षा आदर्श शिक्षा है और वही शिक्षक, आदर्श शिक्षक कहलाने की योग्यता रखता है जो बालकों को आर्थिक, सामाजिक, भाषायी, क्षेत्रीय एवं शारीरिक किसी भी आधार पर अलग न करके केवल शिष्य मानकर उन्हें शिक्षित करे । शिक्षा पाने का अधिकार हर बालक को है, चाहे वह गरीब हो या अमीर, शिक्षक का कर्तव्य सभी को समान रूप से शिक्षा देना है । शारीरिक रूप से असक्षम और धीमा सीखने या सीखने में किसी भी प्रकार की बाधा महसूस करने वाले विशिष्ट बालकों के प्रति तो शिक्षक की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है ।

5- आधुनिक युग में शैक्षिक विकास के साथ-साथ भौतिकवाद की दौड़ भी तेज हो गई है । प्रत्येक व्यक्ति अधिक से अधिक सुख सुविधाएँ जुटा लेने के लिये प्रयासरत है। शिक्षा जैसे पुनीत क्षेत्र का व्यावसायीकरण

(commercialisation) होता जा रहा है। इस कारण से न पहले जैसे शिक्षक मिलते हैं और न ही पहले जैसे शिष्य। आज देश में हमें ऋषि वशिष्ठ, महर्षि सान्दीपनी, गुरु द्रोणाचार्य, आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य, आचार्य विष्णुशर्मा जैसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो राष्ट्र निर्माण के लिये भगवान राम, श्री कृष्ण, अर्जुन एवं एकलव्य और चन्द्रगुप्त मौर्य जैसे आदर्शवादी, कूटनीतिज्ञ और महान शासक तैयार कर सकें। आजकल बच्चों में आ रहे मूल्यों में गिरावट के सन्दर्भ में शिक्षकों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गयी है। मैं यहाँ "पंचतंत्र" के रचयिता पंडित विष्णुशर्मा का उल्लेख करना चाहूँगा जिन्होंने ई.पू. दूसरी सदी में दक्षिण भारत के महिलारोप्य नगर के राजा अमरशक्ति के तीनों मूर्ख पुत्रों को नैतिकता से परिपूर्ण पशु-पक्षियों की विषयवस्तु पर आधारित रोचक बाल कथाओं के माध्यम से शिक्षा देकर मात्र छः माह में उन्हें विद्वान और कूटनीतिज्ञ बना दिया और इसके बदले में कुछ भी दक्षिणा लेने से मना कर दिया। क्या आज के समय में ऐसे गुणों वाले आदर्श शिक्षकों की हम अब कामना कर सकते हैं? वस्तुतः नहीं। अब समय आ गया है कि शिक्षक बालकों को विज्ञान, गणित, तकनीकी विषयों के साथ-साथ **मूल्य-आधारित शिक्षा** भी प्रदान करे क्योंकि मूल्य-आधारित शिक्षा बालकों के आचरण पक्ष को मजबूत बनाती है; वह उनमें दया, विनम्रता, करुणा, सत्य, प्रेम, अहिंसा आदि भावात्मक गुणों को समाहित कर उन्हें अपने बड़ों का, समाज का, राष्ट्र का और मानवता का सम्मान करना सिखाती है।

6- आज हम सिर्फ जानकारियों से विद्यार्थियों का मस्तिष्क तो भर देते हैं परन्तु उन्हें विचारशील और सृजनात्मक नहीं बनाते। अतः आज हमें ऐसे युवा तैयार करने होंगे जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक, आर्थिक, चारित्रिक स्तर पर पूर्ण सबल हों; जिससे न केवल उनका अपितु उनके परिवार का, समाज का व सम्पूर्ण राष्ट्र का उत्थान हो सके।

7- छात्र ही किसी राष्ट्र के भविष्य निर्माता होते हैं । अतः शिक्षक की जिम्मेदारी तो बहुगुणित हो जाती है क्योंकि वह तो किसी राष्ट्र के निर्माता का भी निर्माता होता है । हम सच्चे अर्थों में अपने देश के दूसरे राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के सपनों को तभी पूरा कर पाएंगे और शिक्षक दिवस की सार्थकता तभी सिद्ध कर पाएंगे ; जब हम बालकों के भविष्य-निर्माण को अपने जीवन के उद्देश्यों के केन्द्रबिन्दु में रखेंगे ।

8- अंत में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की इन पंक्तियों को मैं आपके साथ साझा करना चाहूँगा :

आओ फिर से दिया जलाएं,
भरी दुपहरी में अँधियारा ,
सूरज परछाईं से हारा ।
अंतरतम का नेह निचोड़ें-
बुझी हुई बाती सुलगाएँ ।
आओ फिर से दिया जलाएँ ॥

सभी को शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !